International Journal of Education and Science Research Review
Volume-1, Issue-3 June- 2014
E- ISSN 2348-6457
P- ISSN2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

शिक्षा में संवेगात्मक बुद्धि की उपादेयता

मनीष कुमार शर्मा
शोद्यार्थी,
श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाल विश्वविद्यालय,
विद्यानगरी, झुन्झुनू (राजस्थान)

प्रस्तावना

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ सामाजिक, संवेगात्मक एवं मानसिक विकास का मार्ग प्रषस्त करती है। शिक्षा का लक्ष्य बालक का सर्वांगीण विकास करना होता है बालक के सर्वांगीण विकास के परिवार, विद्यालय, शिक्षा एवं समाज का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

संवेगात्मक बुद्धि को समझने हेतु बुद्धि से आरम्भ करना होता है। बुद्धि को सीखने की क्षमता कहा जाता है। अधिक बुद्धि वाला व्यक्ति अधिक गहनता एवं शीघ्रता से सीखने में योग्य होता है। इसके अतिरिक्त इसे 'अमूर्त चिन्तन' के रूप में भी जाना जाता है जिससे परिस्थितियों को समझने में प्रत्ययों एवं संकेतों का प्रभावी उपयोग विशेष तौर पर समस्याओं के समाधान में आंशिक एवं मौखिक संकेतों के द्वारा किया जाता है।

कोई भी व्यक्ति, अधिकारी अपने कार्यक्षेत्र में तब ही सफल होता है जब वह अपने मित्रों, सहयोगियों एवं अधिकारियों की समस्याओं एवं परेशानियों को समझ कर उनके साथ व्यावहारिक रूप से पेश आता है। व्यक्ति के व्यावहारिक रूप को निर्मित करने में संवेगात्मक बुद्धि की अहम् भूमिका रहती है। संवेगात्मक बुद्धि द्वारा व्यक्ति में अंतर वैयक्तिक जागरूकता एवं प्रबन्धन का गुण विकसित होता है।

संवेगात्मक बुद्धि किसी व्यक्ति में संवेगात्मक योग्यता तथा संवेगात्मक कौशल विकसित करती हैं, जिससे संवेगात्मक सम्बन्धों के निर्वाह में सहयोग प्राप्त होता है। संवेगात्मक बुद्धि को सार्वजनिक रूप में अधिकांश नेताओं के लिए प्रभावपूर्ण बातचीत और ठोस कौशल के लिए जाना जाता है। वे पूरी दुनिया को प्रेरित एवं प्रभावित करने के लिए उनके साथ काम कर सकते हैं। वे अपने तरीके से दूसरों के लिए कुछ समानता निर्मित कर सकते हैं।

बुद्धि के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए बैसलर ने बताया है कि बुद्धि अनेक शक्तियों का समुच्चय है जिसके आधार पर व्यक्ति में प्रयोजनपूर्वक कार्य करने, तर्कपूर्वक सोचने और अपने वातावरण (पर्यावरण) के प्रति उचित प्रकार से व्यवहार करने की समुच्चय योग्यता विकसित होती है। जिससे बुद्धिमान व्यक्ति अनुभव को प्रभावपूर्वक प्रयोग करता है, अधिक लम्बे समय तक अपने ध्यान को लगाये रखने में समर्थ होता है, एक नवीन अपरिचित परिस्थिति के साथ अधिक तेजी, कम असमंजस्य एवं कम गलतियों के साथ अनुकूलन करता है।

संवेगात्मक बुद्धि व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण गुणों का एक समूह है जिसके आधार पर व्यक्तियों की तुलना की जा सकती है। संवेगात्मक बुद्धि को आंतरिक प्रतिक्रिया, परिस्थितिजन्य प्रतिक्रिया एवं आनुवांशिक प्रतिक्रिया के विकास की तुलना में ज्ञानात्मक प्रक्रिया के स्मृति, बोध, तार्किकता एवं समस्या समाधान के

मध्यस्थ के रूप में समझा जा सकता है जिसे संवेगात्मक व्यवहार का उच्च रूप माना जाता है। जिसके आधार पर संवेगात्मक ज्ञान में अधिकता होती है जिससे संवेगात्मक व्यवहार में विभिन्नता दृष्टिगत होती है।

डेनियल गोलमैन ने ''ब्रेन साइंस : एक बायोलॉजी की वर्तमान खोज'' पुस्तक लिखी है जिसमें उन्होंने यह बताया है कि हम लोग एक–दूसरे से तार द्वारा इस प्रकार से जुड़े रहत हैं कि हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू पर तथा प्रत्येक संबंध पर इसका गहरा प्रभाव पडता है व्यवहार का विषैला प्रभाव व्यक्ति को क्रोधी, ईर्ष्यालु, कुण्ठित एवं अशिष्ट बना देता है जबकि पौष्टिक (बलवर्द्धक) व्यवहार व्यक्ति को सम्माननीय, प्रामाणिक एवं योग्य बनाता है।

ऐसा देखा जाता है कि बहुत से व्यक्ति अपना व्यवसाय खो देते हैं, मित्र खो देते है, जीवन साथी खो देते हैं क्योंकि उनमें संवेगात्मक असामर्थ्य होता है जिससे विषैला व्यावहारिक संबंध विकसित होता है तथा अन्य कारण भी इसके साथ मिल जाते हैं जबकि पौष्टिक व्यवहार द्वारा व्यक्ति में संवेगात्मक बुद्धि का सही रूप विकसित होता है जिससे उनके अधिक मित्र होते हैं, वे अपने व्यवसाय में अधिक सफल होते है तथा अधिक सुखी जीवनयापन करते हैं।

यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि हम सभी संवेगात्मकता के लिए बनाये गये हैं और हमारे चारों ओर जो लोग हैं उनके सोच मस्तिष्क से मस्तिष्क द्वारा एक दूसरे से जुड़े होते हैं। हमारी दूसरों के प्रति अनुक्रिया तथा दूसरों की हमारे प्रति अनुक्रिया एक जैवकीय प्रभाव बनाता है तथा हार्मोन को हमारे हृदय से रक्षा तंत्र तक भेजता है जिसमें एक पौष्टिक (अच्छा) संबंध विटामिन की तरह कार्य करता है तथा बुरा संबंध जहर की तरह कार्य करता है। हम दूसरों की भावनाओं की उसी प्रकार पकड़ते है जैसे–सर्दी जुकाम पकड़ते है तथा अकेलापन या एकाकीपन तथा संवेगात्मक दबाव जीवन को संकुचित कर देता है जिससे विषैला व्यवहार विकसित हो जाता है।

संवेगात्मक बुद्धि व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण गुणों का एक समूह है जिसके आधार पर व्यक्तियों की तुलना की जा सकती है। संवेगात्मक बुद्धि को आंतरिक प्रतिक्रिया, परिस्थितिजन्य प्रतिक्रिया एवं आनुवांशिक प्रतिक्रिया के विकास की तुलना में ज्ञानात्मक प्रक्रिया के स्मृति, बोध, तार्किकता एवं समस्या समाधान के मध्यस्थ के रूप में समझा जा सकता है जिसे संवेगात्मक व्यवहार का उच्च रूप माना जाता है। जिसके आधार पर संवेगात्मक ज्ञान में अधिकता होती है जिससे संवेगात्मक व्यवहार में विभिन्नता दृष्टिगत होती है।

नेन्सी कैन्टर तथा डेनियल गोलमेन ने संवेगात्मक बुद्धि हेतु निम्नलिखित पहलुओं को महत्वपूर्ण माना है–

1. परिस्थिति के अनुरूप निर्णय करना।
2. संवेदनशीलता रखना।
3. व्यवहार कुशलता प्रदर्शित करना।
4. दूसरों की भावनाओं को उचित प्रकार से समझना।
5. प्रतिकूल परिस्थितियों में धैर्य बनाये रखना।
6. अपने व्यवहार से दूसरों को प्रसन्न रखना।
7. जिंदगी में खुशी के पल ढूंढना।
8. संबंधों का सफलतापूर्वक निर्वहन करना।

संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को अपने समाज के अनुकूल समायोजन करने की प्रभाविता रखने, दूसरे लोगों के साथ प्रभावपूर्ण व्यवहार करने, दूसरों के साथ अच्छा आचरण अपने एवं उनसे मिल–जुलकर रहने में सहयोग प्रदान करती है जिससे व्यक्ति में व्यवहार कौशल विकसित होती है। इसे स्पष्ट करने हेतु कार्ल एलवेरेस्ट ने संवेगात्मक बुद्धि को पांच आयामों में वर्गीकृत किया है,जो निम्न है।

कुछ या दूसरों के संदर्भ के साथ सभी मानवीय अन्तःक्रिया स्थान लेती है तथा एक के साथ अन्तःक्रिया करने के संदर्भ में विशेषज्ञता संबद्ध करती है। इसलिए इस कारण के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि का अर्थ संदर्भ समझना, विभिन्न संदर्भों के मध्य एवं संदर्भों की

इकाईयों के मध्य व्याप्त कठिन जानकारी को समझना तथा एक व्यक्ति के उद्देश्यों की प्राप्ति के विभिन्न संदर्भों में आचरण करने की जानकारी रखता है। जबकि दूसरे शब्दों में संवेगात्मक बुद्धि व्यवहार का अनुमान लगाती है जिससे कि हम संवेगात्मक बुद्धि के सूचक (संकेतांक) के रूप में विभिन्न अनुसरण करने योग्य व्यवहार का उपयोग कर सकें।

इस प्रकार षिक्षा व्यवस्था में संवेगात्मक बुद्धि की उपादेयता स्वतः स्पष्ट होती है।

References :

1. Barnes, M.L., & Sternberg, R.J. : Emotional intelligence and decoding of nonverbal cues. Intelligence, 1989.
2. Feldman, D. A. : The Handbook of Emotionally Intelligent Leadership: Inspiring Others to Achieve Results, Leadership Performance Solutions Press, Falls Church, VA, 1999
3. Goleman, Daniel. Emotional Intelligence : Why It Can Matter More Than IQ. New York : Bantam, 1995.
4. Goleman, D. : Working with Emotional Intelligence, Bantam Books, New York, 1998
5. Guilford, J.P. : The nature of intelligence. New York: McGraw-Hill, 1967
6. Guilford, J.P. & Hopener R. : " The Analysis of Intelligence", New york, McGraw Hill, 1971.